ओम् शान्ति 5-10-11 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश - दादी गुल्जार

आज अमृतवेले बाबा के पास जाना हुआ। सदा के सदृश्य पहले दूर से दृष्टि का भाग्य मिलता है। ऐसे ही शक्तिशाली दृष्टि लेते हुए सम्मुख पहुंच गई और अमूल्य परमात्म बाहों के झूले में झूल रही थी। वह अतिन्द्रिय सुख का अनुभव तो अनुभवी जाने। कुछ समय के बाद बाबा बोले, आओ मेरी बाप के दिलतख्तनशीन बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो! मैं मुस्कराते बोली, बाबा आजकल तो सब तरफ सबके मन में यज्ञ की प्लैटिनम जुबली की खुशी है। हर बच्चा वाह बाबा वाह! के गीत गा रहे हैं और बहुत करके सभी बड़े छोटे देश सेवा के प्रोग्राम उमंग-उत्साह से कर रहे हैं। अब तो सबके मन में यही उमंग है कि बाप को विश्व में प्रत्यक्ष करना ही है, जो सब बोलें ***''हमारा बाबा आ गया, आ गया।''***

बापदादा मुस्कराये और बोले, बापदादा के पास बच्चों का उमंग पहुंच रहा है और बच्चों का उत्साह देख बाप भी बच्चों को वाह बच्चे वाह का वरदान दे रहे हैं और मुबारक भी दे रहे हैं। जो बाप के साथी बन सेवा का पार्ट अच्छा बजा रहे हैं। बाप ने तो यह इशारा दे दिया है कि अब दुनिया की हालत तो देख रहे हैं कि कितने गिरावट की तरफ जा रही है। ऐसे समय में हर एक बच्चे को **सदा मर्सीफुल स्थिति में स्थित हो आत्माओं प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, स्नेह और रहम की भावना से सकाश देनी है तब सबका कल्याण होगा।** स्व की सेवा और विश्व की सेवा के डबल बैलेन्स द्वारा ही सब को मुक्ति की ब्लैसिंग दिलाओ। नॉलेजफुल और पावरफुल, फुल स्थिति के बैलेन्स द्वारा ही ब्लैसिंग मिलेगी इसलिए हे बच्चों, अब विधाता बनो, एक घड़ी भी सेवा बिना न जाये। निरन्तर सेवाधारी बनो। 1- मन्सा द्वारा बाप की किरणें दिलाओ। 2- वाचा द्वारा बाप का वर्सा दिलाओ। 3- और कर्मयोग द्वारा सर्व को कर्मयोगी का अनुभवी बनाओ। ऐसे सर्व के सदा कल्याणकारी बनो। बापदादा हर बच्चे को अब सदा सेवाधारी स्वरूप में देखने चाहते हैं। बोलो, हर बच्चे का बाप से दिल का प्यार है ना। बाप का भी हर बच्चे से बहुत बहुत प्यार है और हर बच्चे प्रति यही आश है कि **''मेरा हर बच्चा समान बाप बन बाप के साथ राज घराने के अधिकारी बनें, दूर न जाये।''** बोलो, यह पसन्द है ना! 1- पास में चलना है। 2- पास होना है। 3- पास के सम्बन्ध में रहना है।

उसके बाद आज बापदादा बच्चों के प्यार में ऐसा लीन था जो वतन में होते कुछ समय के लिए जैसे बापदादा बच्चों से मिलन मनाने साकार वतन चले गये। थोड़े समय बाद बाबा बोले, देखा बच्ची, बाप का हर बच्चे से कितना दिल का प्यार है। ऐसे ही हर ब्राह्मण का भी हर ब्राह्मण परिवार के बच्चे से प्यार हो क्योंकि बाप का बच्चा तो बना है ना। कोटों में कोई तो है ना।

उसके बाद बाबा ने खास दादी जानकी और सर्व सेवा निमित्त बने हुए बच्चों को इमर्ज किया। सबको बहुत दिल की मुबारक दी। साथ में विदेश से आये हुए बच्चों को भी खास याद कर याद दी। उनके बाद हम भी साकार वतन में पहुंच गई। अच्छा। ओम् शान्ति।